डिजिटल होना | शिक्षक क्षमता विकास

बीबी रज़ा खानम

एल्बर्ट आइंस्टाइन ने कभी कहा था, "कठिनाइयों के बीच ही अवसर निहित होता है।" शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया उन चुनौतियों में से एक है जिन्हें कोविड-19 अपने साथ लेकर आया। इस स्थिति में सभी लोग महामारी के कारण होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए नए विकल्प ढूँढ़ने का पुरज़ोर प्रयत्न कर रहे हैं। जैसे ही कोविड-19 के प्रभाव स्पष्ट हुए स्कूल तुरन्त बन्द हो गए और कुछ समय के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पूरी तरह ठप्प पड़ गई। शिक्षकों की क्षमता विकास ने भी एक नया मोड़ ले लिया। अब इसका तरीक़ा वास्तविक अन्त:क्रिया से डिजिटल अन्त:क्रिया में बदल गया। सरकारी स्कूलों ने शिक्षण का विकेन्द्रीकरण करके और सीखने की काल्पनिक स्थितियाँ पैदा करके एवं ऑनलाइन माध्यम का इस्तेमाल करके इन चुनौतियों का जवाब दिया।

मैं इस दौरान शिक्षक क्षमता विकास के लिए हमारे द्वारा किए गए प्रयोग के अनुभव को साझा कर रही हूँ।

शुरुआत में, हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं थे कि शारीरिक रूप से अनुपस्थित अपने शिक्षकों को साथ लाकर कार्य कर पाएँगे। दूरस्थ विधि (Distance mode) से काम करना हमारे लिए एक अलग और नया तरीक़ा था। शुरुआत में हमें और शिक्षकों दोनों को यह मुश्किल लग रहा था, लेकिन धीरे-धीरे हमने जाना कि यह तरीक़ा काम करता है और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना उतना मुश्किल नहीं है—वास्तव में यह काफ़ी आसान और प्रभावी है!

हममें से कई लोग शिक्षकों, प्रधान शिक्षकों और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क बनाकर रखने और उन्हें सार्थक गतिविधियों में शामिल करने के लिए विभिन्न तरीक़े आज़मा रहे हैं। इसलिए हमारे पास कुछ अनुभव पहले से था। हमने महसूस किया कि अब हम बड़ी संख्या में शिक्षकों तक पहुँच सकते हैं। पहले की तुलना में ज़्यादा बड़े क्षेत्रों को अधिक बार सम्मिलित कर सकते हैं। शिक्षक भी ऑनलाइन माध्यम को ख़ुद को विकसित करने के साथ-साथ महामारी के कारण पैदा हुए तनाव को दूर करने का अच्छा ज़रिया मान रहे हैं।

हमने शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए उनके साथ कार्य करने के विभिन्न तरीक़ों पर विचार-मन्थन किया। फिर शिक्षकों के उस समूह के साथ कार्य शुरू किया, जिनके साथ हमने पहले प्रत्यक्ष रूप से कार्य किया था। शिक्षकों और उनकी ज़रूरतों को जानने के बाद, हमने उनकी रुचि, दृष्टिकोण, भागीदारी और उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों के अनुसार खाक़ा बनाया।

बदलाव की तैयारी

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने कहा था, "किसी और चीज़ से पहले, तैयारी सफलता की कुंजी है।" पहले हमने समूहों और उनकी ज़रूरतों की पहचान कर ली। फिर हमें शिक्षकों के वर्तमान स्तर और विषय के ज्ञान, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की समझ,सीखने-सिखाने के तरीक़े (teaching practices) के सन्दर्भ में हम उन्हें जिस स्तर पर ले जाना चाहते हैं, इसका ध्यान रखते हुए उनके सीखने की प्रक्रिया के खाक़े को तैयार करना था। उन्हें इस प्रक्रिया में शामिल करना भी ज़रूरी था ताकि वे स्वयं सीखने की ज़िम्मेदारी लें। ऐसा हमने उनकी ज़रूरतों और उन्हें पूरा करने की हमारी योजनाओं पर चर्चा करके किया। हमने अपने उद्देश्यों, अन्त:क्रिया के तरीक़ों और बारम्बारता के बारे में भी बात की। हमने अवधारणा नोट तैयार किए और उन पर राय लेने के लिए उन्हें समूह के साथ साझा किया। इससे यह प्रक्रिया समृद्ध हुई, जिससे हमें उन हिस्सों को पहचानने में भी मदद मिली जिन पर शायद हमारा ध्यान नहीं गया होता।

चूँकि हमें अपने टूल किट में ठोस उदाहरणों और अनुभवों की आवश्यकता थी, इस कारण तैयारी महत्त्वपूर्ण थी। ऐसा करने के लिए हमने संसाधन जुटाए, पढ़ा, मार्गदर्शन माँगा और संगठन के उन लोगों तक पहुँचे जो स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य कर सकते थे, ताकि हम उनके अनुभव से लाभ उठा सकें। इससे हमें सामग्री के साथ-साथ सत्रों की योजना के सन्दर्भ में भी अच्छी तैयारी करने में मदद मिली।

दूरस्थ विधि से सुगमीकरण करने के लिए अपने आप को तैयार करना भी बहुत ज़रूरी था। शिक्षकों के शारीरिक रूप से उपस्थित हुए बिना हम उनके साथ काम कर रहे थे। उन शिक्षकों के साथ भी अन्त:क्रिया कर रहे थे जिनसे हम वास्तविक रूप में कभी नहीं मिले थे। हम न तो उनके मन में चल रहे विचारों को पढ़ सकते थे और न ही उनके चेहरे के भाव भाँप सकते थे। आभासी रूप से जुड़ने के लिए यह ज़रूरी है कि लोग ज़्यादा दक्ष हों। हमें अपने संचार कौशल पर

काम करने की भी ज़रूरत थी। मसलन सत्रों के दौरान कितना बोलना है, कब हस्तक्षेप करना है, कैसे संयमित करना है, सभी शिक्षकों को कैसे शामिल करना है ताकि कोई भी छूटा हुआ महसूस न करे, कैसे प्रभावी ढंग से अपनी आवाज़ को नियंत्रित करना है आदि।

शिक्षकों को ऑनलाइन सत्रों के लिए समर्थ बनाना

डिजिटल माध्यम का इस्तेमाल

सबसे पहले, हमें अपने शिक्षकों को टेलीकान्फ्रेंसिंग करने और सत्रों में शामिल होने के लिए *एमएस टीम्स* जैसे डिजिटल माध्यम का उपयोग करने के लिए तैयार करना था। हमने उनसे व्यक्तिगत रूप से बात की और चरणों की व्याख्या की। जिसमें *म्यूट व अनम्यूट* करने के लिए ऑडियो बटन का उपयोग करना और टेलीकान्फ्रेंस सत्र के दौरान फ़ोन पर बात करने के लिए होल्ड पर न जाने जैसी बातें शामिल थीं। हमने अभ्यास किया कि कैसे सत्र से डिस्कनेक्ट करें, फ़ोन कॉल लें और फिर वापिस सत्र में जुड़े। हमने *एमएस टीम्स* में मीटिंग में जुड़ने के चरणों और इसकी अन्य उपयोगिताओं के स्क्रीनशॉट लिए और उन्हें शिक्षकों के साथ साझा किया।

पठन सामग्री साझा करना

हमने चर्चा के दो से तीन दिन पहले व्हाट्सऐप और ईमेल के माध्यम से पठन सामग्री साझा की, ताकि शिक्षक तैयार हो सकें। हमने पाया कि इन सामग्रियों को पीडीएफ प्रारूप में साझा करना बेहतर था, क्योंकि पीडीएफ को फ़ोन पर खोलना आसान है। हमें इस बात का ध्यान रखना था कि पठन सामग्री बहुत बड़ी न हो क्योंकि अधिकांश शिक्षक पढ़ने के लिए केवल अपने मोबाइल फ़ोन का उपयोग कर रहे होंगे।

विषयवस्तु

विषयवस्तु को चुनते समय, हमारे मन में दो सवाल थे : मैं कक्षा में बेहतर तरीक़े से सीखने-सिखाने में कैसे मदद कर सकती हूँ? इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मेरे लिए सही विषयवस्तु क्या है?

हमने बहुत ही सरल लेखों के साथ शुरुआत की ताकि शिक्षक उनसे आसानी से जुड़ सकें और फिर हम समूह की प्रतिक्रिया, ज़रूरतों और रुचियों के आधार पर आगे बढ़े।

शिक्षकों के साथ अपने काम में हमने जिन स्रोतों का इस्तेमाल किया उनमें से कुछ विभिन्न विषयों पर कन्नड़, अँग्रेज़ी और गणित की हैंडबुक थीं। हमने *लर्निंग कर्व*, अरविन्द गुप्ता, *बालगा*, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के पुलआउट, *बायालु* के लेखों का उल्लेख किया। अन्य स्रोतों में *चाइल्ड'स लैंग्वेज एंड टीचर, तोत्तोचान, दिवास्वप्न,* कमला मुकुन्दा की *व्हॉट डिड यू आस्क एट स्कूल टुडे*[1], ब्रायंट एंड नून्स की *चिल्ड्रन डूइंग मैथमेटिक्स* जैसी किताबें थीं। गणित के लिए इग्नू की सामग्री, गुरु चेतना के लेख, एनसीएफ पोजिशन पेपर्स, एनसीईआरटी लर्निंग आउटकम्स, डीएसईआरटी लर्निंग आउटकम्स कुछ अन्य प्रकाशन थे जिन्होंने हमारे शिक्षकों को जोड़े रखने और ख़ुद से सीखने को सरल बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (ASER) और नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) की रिपोर्टों का भी हमारी चर्चाओं में उपयोग किया गया ताकि शिक्षकों को वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य की एक व्यापक तस्वीर मिल सके।

[यह किताब आज तुमने स्कूल में क्या पूछा नाम से हिन्दी में भी उपलब्ध है।]

सत्र की योजना बनाना

शिक्षकों की ताक़त को पहचानना

यह ज़रूरी था। उदाहरण के लिए, यदि एक समूह में कोई शिक्षक कक्षा-अभ्यास (Classroom practices) में और शिक्षण सहायक सामग्री बनाने में अच्छी है, तो वह अपने ख़ुद के अनुभवों के आधार पर दूसरों को इन सहायक सामग्रियों और अभ्यास के महत्त्व को समझाने के लिए एक बहुत अच्छी स्रोत व्यक्ति हो सकती थी। वह समूह के अन्य लोगों को भी इन तरीक़ों को अपनाने के लिए प्रभावित कर सकती थी।

सत्र की कल्पना करना

पाठ-योजनाओं से लेकर प्राप्त किए जाने वाले सीखने के परिणामों तक के लिए ऑनलाइन सत्रों की योजना बनाई जानी थी। इसके लिए, बड़े उद्देश्यों को ऐसे छोटे लक्ष्यों में तोड़ दिया गया था जिन्हें हमारे शिक्षकों द्वारा प्राप्त किया जा सकता था। हमने विभिन्न वर्कशीट, असाइनमेंट के माध्यम से सीखने को पुख़्ता किया। यह सुनिश्चित किया कि शिक्षकों का हर क़दम पर मूल्यांकन किया जाए और तदनुसार अपनी शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव किए। हमने इस बात की पहचान की कि समूह में प्रत्येक शिक्षक को किन स्तरों तक पहुँचना है और उस स्तर तक पहुँचने में उनकी मदद भी की।

हमारे अनुभव से कुछ सुझाव

हमारे सत्र पिछले सत्र के सारांश के साथ शुरू होते और चर्चा किए गए विषयों का संक्षिप्त विवरण देने के साथ समाप्त होते थे। इससे शिक्षकों से यदि कुछ छूट गया हो तो भी उन्हें सत्र से जुड़े रहने में मदद मिलती थी। कभी-कभी बदलाव के लिए सत्र में भाग लेने या सत्र को सरल बनाने के लिए अपने किसी सहयोगी को आमंत्रित करना भी काफ़ी मददगार रहा। इससे शिक्षकों को नए व्यक्ति से बातचीत करने और सीखने में मदद मिलती। यदि हम तयशुदा समय पर सत्र का संचालन करने में सक्षम नहीं होते, तो पहले से ही शिक्षकों को सूचित कर दिया जाता ताकि उन्हें प्रतीक्षा नहीं करनी पड़े। इन बातों ने समूह

चर्चा की निरन्तरता को बनाए रखने और प्रतिभागियों के बीच एक मज़बूत रिश्ता विकसित करने में वास्तव में मदद की।

हम सत्र के बाद प्रतिभागियों के साथ बैठक के मिनट्स साझा करते। यदि कोई शिक्षक सत्र में नहीं जुड़ पाता, तो सत्र के बाद उनसे सम्पर्क किया जाता और सत्र के बारे में जानकारी दी जाती। शिक्षक से पूछा जाता कि उन्हें सत्र में जुड़ने में कोई कठिनाई तो नहीं आई और अगले सत्र में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता। हम शिक्षक से इस बारे में भी बात करते कि कैसे उनकी उपस्थिति चर्चा को और समृद्ध करने में मदद करती। जो शिक्षक चर्चा में शामिल होते उन्हें मैसेज करके बताते कि उनकी भागीदारी ने चर्चा को कैसे बेहतरीन बनाया। अपने सत्रों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए हम विभिन्न तरीक़ों से अपनी भी समीक्षा करते रहते।

अब तक हमने सीखा

- शिक्षक नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए तैयार हैं अगर उन्हें सीखने का तरीक़ा आसान व उपयोगी हो।
- स्पष्ट एवं व्यवस्थित योजना, अवधारणाओं की निरन्तरता, अवधारणाओं को कक्षा से जोड़ना, पहले से ज्ञात अवधारणाओं के नए आयामों को सामने लाना शिक्षकों को इस प्रक्रिया से जोड़े रखने की कुंजी हैं।
- रुचि बनाए रखने के लिए शिक्षकों के बीच अपनेपन की भावना पैदा करना ज़रूरी है।
- भयरहित और आकर्षक ऑनलाइन मंच तैयार करना सम्भव है, बशर्ते माध्यम की ताक़तों और कमियों की एक साझी समझ हो।

अपने अवलोकनों एवं शिक्षकों और टीम के सदस्यों के साथ चर्चाओं के आधार पर हम अपने द्वारा किए गए काम के प्रभाव का अनुमान लगा पाए। शिक्षक भी शुरुआती कक्षाओं के लिए सार्थक शिक्षण-अभ्यासों को अपना पाए और कक्षा के लिए सहायक शिक्षण सामग्री, खेल व गतिविधियाँ डिज़ाइन करने जैसी सहायक सामग्रियों को तैयार कर पाए। वे अपने द्वारा सीखी गई बातों को साझा करने और अवधारणाओं के बीच सम्बन्ध को समझने और विभिन्न स्तरों के बच्चों के साथ काम करने के लिए विभिन्न स्तरों की गतिविधियों को विकसित करने और बनाने पर लेख लिखने में भी सक्षम हुए।

आगे का रास्ता

स्कूल खुलने के बाद हम इन शिक्षकों की कक्षाओं में जाकर इनके पढ़ाने के तरीक़ों में बदलाव का निरीक्षण करेंगे, इनकी ज़रूरतों को समझेंगे, समूहों का निर्माण करेंगे और तदनुसार आगे के जुड़ाव के लिए रूपरेखाएँ तैयार करेंगे। हम ऑफ़लाइन माध्यम से बड़े समूहों तक पहुँचने में इन शिक्षकों की मदद लेंगे। स्कूलों में वापस आने के बाद इन शिक्षकों द्वारा लाए गए बदलाव निश्चित रूप से दूसरों को प्रभावित करेंगे। हम इस अनुभव से निकलने वाले बेहतरीन अभ्यासों को साझा करने के लिए ज़रूरी प्रक्रियाओं को डिज़ाइन करना चाहेंगे।

हम स्वैच्छिक शिक्षक मंचों जैसी जगहों पर ऑनलाइन कार्य को जारी रखेंगे, क्योंकि इस तरीक़े से हम बड़ी संख्या में विभिन्न ब्लॉकों के शिक्षकों तक पहुँचने में सक्षम हैं। ऑफलाइन माध्यम में ऐसा करना मुश्किल होगा। हमें ख़ुशी है कि एक टीम के रूप में, हम संकट की इस अवधि में भी शिक्षकों के साथ अपने काम को जारी रखने के अवसरों को खोज पाए और दोनों पक्षों के लिए कुछ स्थायी अनुभव बना पाए। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसने हमारा आत्मविश्वास बढ़ाया।

हमें बात का एहसास हुआ कि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर हम सहजता से दूर बैठे शिक्षकों के साथ काम कर पाए और यह जान पाए कि ऐसा करना काफ़ी आसान है और यह साधन ख़ुद से सीखने के लिए बनाए गए हैं। यहाँ तक कि जिन लोगों को पहले से इनकी जानकारी न हो, वे भी आसानी से इनका उपयोग करना सीख सकते हैं। हमारे कई शिक्षक *एमएस टीम्स, टेलीकान्फ्रेंसिंग, ज़ूम, गूगल हैंडआउट्स* आदि के साथ बहुत सहज हो गए हैं। लेख और अन्य पठन सामग्री साझा करना व्हाट्सएप और ईमेल के माध्यम से हो रहा है। हमारे अनुभव में दो या तीन सत्रों के बाद शिक्षक किसी भी डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म पर बड़ी आसानी और सुचारू रूप से काम करने लगते हैं।



बीबी रज़ा खानम अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन कोप्पल, कर्नाटक में पिछले दो साल से स्रोत व्यक्ति के रूप में काम कर रही हैं। वे भौतिकी में विशेषज्ञता के साथ विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। वर्तमान में वे विज्ञान और गणित समूह के साथ काम कर रही हैं। उनसे **raza.khanam@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : सात्विका ओहरी